

# भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : जून 2013

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-III

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (आयुर्दाय)

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये :-
  - i) आयुर्दाय में दशाओ की क्या भूमिका है?
  - ii) आयुर्दाय के निर्णय में दूसरे और सातवे भाव का क्या महत्व है?
  - iii) योगारिष्ट क्या है? चर्चा करें।
2. निम्नलिखित कुण्डली के लिए पिंडायुर्दाय की गणना करें :  
लग्न-10 रा 3:12, सूर्य-5 रा 24:23, चन्द्रमा-6 रा 10:21, मंगल-5 रा 22:36,  
बुध(व)-5 रा 23:29, गुरु-3 रा 0:32, शुक्र-5 रा 15:11, शनि(व)-1 रा 19:13,  
राहु-4 रा 10:25 (अक्टूबर 11, 1942, दोपहर 04:04, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश)
3. आयुसीमा ज्ञात करने की विधि समझाए व निम्न पत्रिका के लिए निर्धारण करें।  
लग्न 4 रा 10:58, सूर्य-3 रा 29:59, चन्द्रमा-1 रा 27:05, मंगल-2 रा 12:02,  
बुध-3 रा 11:41, बृहस्पति-3 रा 27:16, शुक्र-3 रा 27:39, शनि-4 रा 20:38,  
राहु-4 रा 14:59 (अगस्त 17, 1979, 6:50, हैदाबाद)
4. किन्हीं तीन पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए :-
  - i) 64 नवांश,
  - ii) दैष्कोण,
  - iii) बालारिष्ट में चन्द्रमा की महत्ता
  - iv) छिद्र ग्रह
5. बताए क्या निम्न योग पूर्णायु दर्शाते हैं या नहीं?
  - i) लग्नेश लग्न को देखे, अष्टम भाव को अष्टमेश देखे और बृहस्पति केन्द्र में हो।
  - ii) राहु सप्तम भाव में हो, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो और बृहस्पति लग्न में हो।
  - iii) यदि सभी ग्रह लग्न से चतुर्थ भाव में स्थित हो।
  - iv) पहले 6 भावों में शुभ ग्रह हों और बाद के 6 भावों में अशुभ ग्रह हों।
  - v) बृहस्पति लग्न में हो, शुक्र चतुर्थ भाव में हो, शनि और चन्द्रमा दशम भाव में हो।
  - vi) शनि अष्टम भाव में हो, मंगल पंचम भाव में हो और केतु लग्न में हो।
  - vii) शनि लग्न में अशुभ ग्रह की राशि में हो और शुभ ग्रह 3, 6, 9, 12 में हो।
  - viii) बृहस्पति लग्नेश से केन्द्र में हो और कोई भी अशुभ ग्रह का प्रभाव न हो।
  - ix) उच्च का बृहस्पति लग्न में हो और एक और ग्रह कुण्डली में उच्च का हो।
  - x) लग्न, द्वितीय एवं अष्टम में केवल अशुभ ग्रह हों और केन्द्र को छोड़कर बाकी अन्य भावों में शुभ ग्रह हों।

भाग-II (चिकित्सा ज्योतिष)

6.
  - i) अच्छे स्वास्थ्य के ज्योतिषीय योगों को लिखें।
  - ii) कुण्डली में निम्नलिखित समस्या को देखने के लिए किन ज्योतिषीय नियमों को देखना होगा:  
(अ) मानसिक रोग (ब) अधापन
7. 'सही' अथवा 'गलत' बताए:
  - i) सूर्य हड्डियों का कारक है,

- ii) बृहस्पति व चन्द्रमा वात प्रवृत्ति को दर्शाते है,
  - iii) शनि यकृत के विकार देता है,
  - iv) बली लग्नेश रोग से छुटकारे को दर्शाता है,
  - v) चूँकि बृहस्पति मन्द गाति वाला ग्रह है, इसलिए बृहस्पति लम्बी अवधि वाले रोग देता है,
  - vi) शुक्र मधुमेह का कारक है,
  - vii) अशुभ प्रभावों का फल अनुमन अशुभ गोचर के साथ ही आता है, विशेष तौर पर लग्न, लग्नेश और चन्द्रमा आदि पर,
  - viii) बिमारी के पश्चात शुभ दशा स्वास्थ्य लाभ दिखाता है,
  - ix) बुध, चन्द्रमा और मंगल के कारण मिर्गी का रोग होता है,
  - x) वृषभ, तुला, दूसरा भाव, सप्तम भाव व शनि दन्त रोग को दिखाते है,
8. निम्नलिखित पर चिकित्सा ज्योतिष में क्या महत्त्व है, संक्षिप्त में बताए:
- i) तृतीय भाव ii) छठा भाव iii) अष्टम भाव iv) द्वादश भाव v) देष्काण और शारीरिक अंग
9. इस जातक की मृत्यु आहार नली में कैंसर के रोग से शुक्र-शुक्र-सूर्य में सितम्बर 2012 में हुई। ज्योतिषीय विवेचन करें।
- जन्म 28.9.1946, 12:00 दोपहर, एटा (उ.प्र.)
- लग्न-वृश्चिक 27:25, सूर्य-कन्या 11:25, चन्द्रमा-तुला 15:15, मंगल-तुला 9:18, बुध-कन्या 21:43, बृहस्पति-तुला 7:28, शुक्र-तुला 25:47, शनि-कर्क 13:16, राहु-वृष 21:01, शुक्र-शुक्र-सूर्य - 8.9.2012 से 8.11.2012 तक
10. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखें :-
- i) 64 नवांश,
  - ii) चिकित्सा-ज्योतिष में कालपुरुष की धारणा की व्याख्या करें,
  - iii) जन्म के समय आरंभ हुई दशा